RNI No. MPHIN/25/A4357

अनमोल वचन

'नवरात्रि का पर्व हमें यह संदेश देता है कि अपने भीतर की शक्ति को पहचानिए, बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाइए और सत्य के मार्ग पर निर्भय होकर आगे बढ़िए। क्योंकि माँ दुर्गा की आराधना केवल पूजा नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा है।

विश्वनाथ समाचार

'जनता की सोच — जनहित की खोज'

vishwanathsamachar@gmail.com

वर्ष 01 अंक :- 11 | इंदौर, गुरूवार 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर 2026 तक | पृष्ठ 8, मूल्य 5 रुपया

सीएम फेलोज, विकास गतिविधियों और जनकल्याणकारी कार्यक्रमों का बेहतर क्रियान्वयन और प्रभावी मूल्यांकन सुनिश्चित करेंगे : सीएम डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन और नवाचारी कार्यों से संपूर्ण विश्व प्रभावित है। हम सब के लिए यह गर्व का विषय है कि भारत विश्व का सबसे युवा देश है और हम विश्व को नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश विकास और जनकल्याण की दिशा में निरंतर नित्य नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। प्रदेश के युवा निडरता पूर्वक अपनी योग्यता और क्षमता से सभी क्षेत्रों में उपलब्धियां अर्जित कर रहे हैं। शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी



योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन तथा उनके मूल्यांकन में भी युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री यंग प्रोफेशनल्स फॉर डेवलपमेंट प्रोग्राम के सभी युवा साथी प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। पचपन जिलों से चयनित युवा नई पचपन आशाओं का समुच्चय हैं। यह युवा केन्द्र और राज्य द्वारा संचालित योजनाओं तथा शासन/प्रशासन की इकाईयों द्वारा उनके क्रियान्वयन का प्रभावी मूल्यांकन सुनिश्चित करेंगे। इससे क्रियान्वयन की कमजोरियों को चिन्हित कर उनमें आवश्यक सुधार करने में मदद मिलेगी। राज्य में जनकल्याणकारी नीतियों को लागू करने में जिला प्रशासन, ग्राम पंचायतों और निकायों के चुने गए जनप्रतिनिधियों की भूमिका भी काफी अहम है। सभी यंग प्रोफेशनल्स, शासकीय व्यवस्थाओं के क्रियान्वयन और उनमें जनभागीदारी की भूमिका का बारीकी से अवलोकन करते हुए जिला प्रशासन के लिए भी उपयोगी धरोहर बनें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मुख्यमंत्री यंग प्रोफेशनल फॉर डेवलपमेंट प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित सी. एम. फेलोज के पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में ग्लोबल विलेज फाउंडेशन और सुशासन संस्थान के मध्य एम. ओ. यू. पर हस्ताक्षर भी हुए।

पति को मारकर नीले-ड्रम में भरने वाली मुस्कान को सजा-ए-मौत

प्रेमी साहिल को भी फांसी; मेरठ कोर्ट में बोली- मेरी बच्चियों का ध्यान रखना

मेरठ। मेरठ में प्रेमी के साथ मिलकर पति सौरभ राजपूत की हत्या करने वाली मुस्कान को फांसी की सजा सुनाई गई। उसके प्रेमी साहिल को भी कोर्ट ने मौत की सजा सुनाई। सजा सुनाते हुए जज ने कहा- अधर्म के काम पर सजा देना धर्म होता है। मुस्कान-साहिल आप दोनों ने ही सौरभ की नृशंस हत्या की है। इसलिए माफी स्वीकार नहीं होगी। सजा सुनाने से पहले जेल में बंद मुस्कान और साहिल को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जोड़ा गया। मुस्कान रस्तोगी और साहिल फूट-फूटकर रोने लगे। जज ने मुस्कान से पूछा- तुम अपने पति सौरभ राजपूत की हत्या में दोषी हो, क्या सजा चाहती हो? उसने जवाब दिया-



मेरी बच्चियों का ख्याल रखा जाए। फिर वह खामोश हो गई। इसके बाद साहिल से यही सवाल पूछा गया, तो वह चुप रहा। सजा के ऐलान के बाद सौरभ की मां रो पड़ीं। कहा- शांति से न्याय मिल गया। सौरभ राजपूत की हत्या 3 मार्च, 2025 को हुई थी। मुस्कान और साहिल ने सबूत मिटाने के लिए सौरभ के शव को 5 टुकड़ों में काटकर नीले ड्रम में भर दिया था। इसके बाद उस पर सीमेंट का घोल डाल दिया था।

कौन हैं फांसी की सजा देने वाले जज

मुस्कान-साहिल को फांसी की सजा सुनाने वाले मेरठ के जिला एवं सत्र न्यायाधीश अरविंद कुमार मिश्रा का जन्म 2 जुलाई 1971 को मऊ में हुआ था। उन्होंने बीए, एलएलबी और एलएलएम की पढ़ाई की है। इसके बाद 31 मई, 2003 को न्यायिक सेवा में सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में करियर शुरू किया। करीब 23 साल के न्यायिक अनुभव के दौरान गाजीपुर, अलीगढ़, गोरखपुर, कानपुर और मिर्जापुर समेत कई जिलों में तैनात रहे।

मद्रास हाईकोर्ट ने कहा-तमिलनाडु सरकार लोगों को दुश्मन समझ रही



चेन्नई। मद्रास हाईकोर्ट ने बुधवार को तमिलनाडु पुलिस से आरएसएस के रूट मार्च को अनुमति नहीं देने पर सवाल किया। कोर्ट ने पूछा कि जम्मू-कश्मीर में आरएसएस मार्च कर सकता है, तो तमिलनाडु पुलिस हर साल अनुमति क्यों रोकती है? जस्टिस वी लक्ष्मीनारायणन ने कहा कि सरकार नागरिकों को दुश्मन समझ रही है और विरोध प्रदर्शनों के लिए परमिशन देने से इनकार कर रही है। चाहे कोई भी सरकार आए, आरएसएस को उसके मार्च के लिए अनुमति नहीं दी जाती है। आपका डर क्या है? क्या आप डर रहे हैं? यह टिप्पणी आरएसएस सदस्य वीजी जगदीशन की याचिका पर सुनवाई के दौरान हुई।

दिल्ली सीएम रेखा गुप्ता ने रावण को राम कहा रामलीला में बोलीं- हर राम को मारना होगा

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के एक बयान पर विवाद खड़ा हो गया है। दरअसल, आजादपुर में रामलीला में बुधवार शाम उन्होंने कहा- हर एक राम को मारना होगा। एएपी नेता और दिल्ली के पूर्व मंत्री सौरभ भारद्वाज ने उनके भाषण के वीडियो का एक हिस्सा शेयर किया है। मुख्यमंत्री रेखा कहती हैं- जब तक हर एक राम मारा न जाए, समाज साफ-सुथरा न हो जाए। एएपी ने कहा- आज हर सनातनी और राम भक्त मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से शर्मिंदा है। यह बेशर्मी की हद है और भाजपा की राम-विरोधी मानसिकता को दिखाता है।

11.40 लाख रेलवे कर्मचारियों को 78 दिन का दिवाली बोनस : 3 पेंशन योजनाओं से इंदिरा गांधी नाम हटा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दिवाली से पहले रेलवे के करीब 11.40 लाख कर्मचारियों को 78 दिन का बोनस देने की मंजूरी दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव के मुताबिक, इस पर करीब 2,009 करोड़ खर्च होंगे। बुधवार को कैबिनेट बैठक में यह फैसला लिया गया। इसके अलावा, सरकार ने तीन पेंशन योजनाओं से इंदिरा गांधी का नाम हटाकर उनमें प्रधानमंत्री शब्द जोड़ने का फैसला किया है। दिव्यांगों की पेंशन नियमों में भी बदलाव को मंजूरी दी गई है। इसके तहत अब दिव्यांगों को 18 साल की बजाय जन्म से पेंशन मिलेगी। कैबिनेट ने



राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम को अगले पांच साल तक जारी रखने का फैसला भी लिया है। रेलवे कर्मचारियों को मिलने वाले प्रोडक्टिविटी लिंक्ड बोनस की गणना के लिए अधिकतम मासिक वेतन सीमा 7,000 तय की गई है। इस आधार पर 78 दिन के बोनस की अधिकतम रकम 17,951 बनती है। बोनस का कैलकुलेशन: 7,000 म 12 म 78 ़ 365 = 17,951 यह अधिकतम गणना की रकम है। कर्मचारियों को मिलने वाला वास्तविक बोनस उनकी पात्रता और लागू नियमों के आधार पर अलग हो सकता है। रेलवे के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025-26 में 1,670 मिलियन टन माल की ढुलाई की गई, जो उस साल का रिकॉर्ड था। इस दौरान रेलवे से करीब 7.41 अरब यात्रियों ने सफर किया। रेल मंत्री ने कहा कि बोनस का मकसद कर्मचारियों को उनकी मेहनत के लिए प्रोत्साहित करना और रेलवे के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करना है।

कोलकाता की सड़कों पर इंद्रधनुषी रंग, दावा- बाइकर्स फिसल रहे

कोलकाता। दुर्गा पूजा से पहले कोलकाता की सड़कों और फ्लाईओवर को लाल, नीले, पीले सहित अन्य इंद्रधनुषी रंगों से सजाया गया है। इसी बीच, बारिश के बाद रंगीन सड़क पर बाइकर्स के फिसलने के वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं। हालांकि, दैनिक भास्कर इसकी पुष्टि नहीं करता। इसके कारण सड़क सुरक्षा को लेकर सवाल उठने लगे हैं। कई सोशल मीडिया यूजर्स ने आरोप लगाया कि चमकीले रंगों के कारण सड़कों पर गाड़ी चलाते समय ध्यान भटकता है। वहीं पर्यावरणविदों का कहना है कि ऑयल पेंट के इस्तेमाल के कारण फिसलन बढ़ी है।

मनोज पटेल के विश्वास से संगठन की सीढ़ियां चढ़े प्रणव जायसवाल, भाजपा युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष की दौड़ में मजबूत दावेदारी

विश्वनाथ समाचार

इंदौर (संदीप सेन)। राजनीति केवल पद और प्रतिष्ठा का नाम नहीं, बल्कि विश्वास, समर्पण और संगठन के प्रति निष्ठा की वह लंबी यात्रा है, जिसमें व्यक्ति अपने कर्मों से अपनी पहचान गढ़ता है। देपालपुर विधानसभा की राजनीतिक परिपाटी में भी ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, जहां नेतृत्व ने केवल राजनीतिक समीकरणों को नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं की क्षमता, समर्पण और जमीनी सक्रियता को महत्व देते हुए उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिए। इसी क्रम में देपालपुर विधानसभा क्षेत्र के युवा भाजपा नेता प्रणव जायसवाल का नाम संगठनात्मक सक्रियता और लगातार बढ़ती जिम्मेदारियों के संदर्भ में सामने आता है। विधायक मनोज पटेल के करीबी कार्यकर्ताओं में शामिल प्रणव जायसवाल ने संगठन में अपनी यात्रा एक सामान्य कार्यकर्ता के रूप में शुरू की और समय के साथ अलग-अलग दायित्वों का निर्वहन करते हुए अपनी सक्रिय पहचान बनाई। प्रणव जायसवाल को सबसे पहले अटाहेड़ा बूथ अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली। इसके बाद संगठन ने उनकी सक्रियता और कार्यक्षमता को देखते हुए उन्हें भारतीय जनता युवा मोर्चा श्री 24 अवतार मंडल में महामंत्री का दायित्व सौंपा। संगठन के प्रति उनकी सक्रियता का सिलसिला यहीं नहीं रुका और आगे चलकर उन्हें भारतीय जनता युवा मोर्चा श्री 24 अवतार मंडल अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी मिली। इन दायित्वों की कड़ी को केवल पदों की सूची के रूप में नहीं देखा जा सकता। भाजपा की संगठनात्मक राजनीति में बूथ स्तर से लेकर मंडल स्तर तक लगातार जिम्मेदारियां मिलना किसी भी युवा कार्यकर्ता के लिए संगठन के भीतर उसके काम और सक्रियता का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।



प्रणव जायसवाल युवा हैं, ऊर्जा से भरपूर हैं और संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रियता के साथ अपनी भूमिका निभाते रहे हैं। उनके समर्थकों का कहना है कि विधायक मनोज पटेल के प्रति उनकी निष्ठा और संगठन के प्रति समर्पण ने उन्हें देपालपुर की युवा राजनीति में अलग पहचान दी है। वहीं, मनोज पटेल के नेतृत्व में काम करते हुए उन्होंने बूथ से मंडल तक संगठनात्मक जिम्मेदारियों का अनुभव भी हासिल किया है।

अब जिला स्तर पर दावेदारी की चर्चा

इसी संगठनात्मक पृष्ठभूमि के बीच अब भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष पद के लिए प्रणव जायसवाल की दावेदारी चर्चा में है। संगठनात्मक चुनावों के दौर में उनका नाम जिला अध्यक्ष पद के संभावित दावेदारों में लिया जा रहा है। उनकी दावेदारी को सबसे महत्वपूर्ण आधार उनके अब तक के संगठनात्मक अनुभव और देपालपुर विधानसभा में विधायक मनोज पटेल के साथ उनके लंबे राजनीतिक समन्वय को माना जा रहा है। राजनीतिक और संगठनात्मक हलकों में यह चर्चा भी है कि जिस नेतृत्व ने किसी कार्यकर्ता को बूथ से मंडल स्तर तक आगे बढ़ते हुए देखा हो, उस कार्यकर्ता के प्रति विश्वास का अपना अलग महत्व होता है। प्रणव जायसवाल की वर्तमान दावेदारी को भी इसी विश्वास और संगठनात्मक यात्रा के संदर्भ में देखा जा रहा है। विधायक मनोज पटेल की राजनीति में संगठन और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने की शैली की चर्चा लंबे समय से देपालपुर क्षेत्र में होती रही है। उनके नेतृत्व में कई युवा कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक जिम्मेदारियां मिली हैं। ऐसे में प्रणव जायसवाल का नाम भी उसी कार्यकर्ता परंपरा की एक कड़ी के रूप में सामने आता है।

विश्वास से दावेदारी तक का सफर

प्रणव जायसवाल की कहानी को यदि एक वाक्य में कहा जाए तो यह विश्वास से जिम्मेदारी और जिम्मेदारी से दावेदारी तक पहुंचने की यात्रा है। अटाहेड़ा बूथ से शुरू हुआ संगठनात्मक सफर मंडल महामंत्री और फिर मंडल अध्यक्ष के दायित्व तक पहुंचा और अब जिला अध्यक्ष पद की संभावित दावेदारी तक चर्चा में है। हालांकि अंतिम निर्णय संगठनात्मक प्रक्रिया और पार्टी नेतृत्व द्वारा ही किया जाएगा, लेकिन वर्तमान में प्रणव जायसवाल का नाम युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष पद के लिए चर्चा में होना उनके संगठनात्मक सफर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव जरूर है। देपालपुर की राजनीति में विधायक मनोज पटेल और उनके समर्थक कार्यकर्ताओं के बीच विश्वास का संबंध अक्सर चर्चा का विषय रहा है। प्रणव जायसवाल इसी विश्वास की राजनीति में उभरता हुआ युवा चेहरा हैं। अब देखना यह होगा कि संगठनात्मक प्रक्रिया के अगले चरण में उनकी राजनीतिक और संगठनात्मक यात्रा किस नए दायित्व की ओर आगे बढ़ती है। एक बूथ की जिम्मेदारी से शुरू हुआ सफर यदि जिला संगठन की दहलीज तक पहुंचता है, तो उसके पीछे केवल पदों का क्रम नहीं, बल्कि वर्षों की सक्रियता, संगठन के प्रति प्रतिबद्धता और नेतृत्व के विश्वास की कहानी भी होती है। प्रणव जायसवाल की वर्तमान दावेदारी को इसी नजरिए से देखा जा रहा है।

चिकलोड़ा पंचायत तालाब मामला: 10 महीने बाद प्रारंभिक जांच में शिकायत सही, अब एसडीएम के फैसले का इंतजार

1925 से 1958-59 तक के राजस्व रिकॉर्ड में तालाब की भूमि होने के प्रमाण; क्रय-विक्रय के बाद पटवारी द्वारा भूमि को निजी मद की बताते हुए नामांतरण की कार्रवाई प्रस्तावित करने पर उठे सवाल

विश्वनाथ समाचार

देपालपुर (संदीप सेन)। देपालपुर तहसील के ग्राम चिकलोड़ा स्थित पंचायत तालाब की शासकीय भूमि का मामला अब महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गया है। शिकायत के करीब 10 महीने बाद नायब तहसीलदार आनंद जायसवाल की प्रारंभिक जांच में शिकायत सही पाए जाने की जानकारी सामने आई है। जांच के बाद संपूर्ण प्रकरण की फाइल आगामी कार्रवाई के लिए एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा को प्रेषित कर दी गई है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि ऐतिहासिक राजस्व रिकॉर्ड में तालाब की भूमि दर्ज होने के बावजूद बाद के वर्षों में हुए सर्वे विभाजन, क्रय-विक्रय और नामांतरण की प्रक्रिया की गहराई से जांच होगी या नहीं।



नंबर 22 की भूमि पंचायत तालाब के नाम दर्ज होने की बात कही गई है। आरोप है कि बाद में इस भूमि को विभाजित कर नए सर्वे नंबर बनाए गए और निजी व्यक्तियों के नाम पर प्रविष्टियां दर्ज की गईं। इन भूखंडों के क्रय-विक्रय की प्रक्रिया भी सामने आई है।



1925 से 1958-59 तक के रिकॉर्ड में तालाब की भूमि होने का उल्लेख

प्रारंभिक जांच के दौरान वर्ष 1925 से लेकर 1958-59 तक के राजस्व अभिलेखों का परीक्षण किया गया। जांच में सामने आए तथ्यों के अनुसार, संबंधित भूमि का ऐतिहासिक रिकॉर्ड तालाब की भूमि होने की ओर संकेत करता है। ऐसे में भूमि के मूल स्वरूप और बाद के राजस्व रिकॉर्ड में हुए बदलावों की जांच महत्वपूर्ण हो जाती है। मामले में पहले सामने आई जानकारी के अनुसार, ग्राम चिकलोड़ा के मूल शासकीय सर्वे से नए सर्वे नंबरों का विभाजन किसकी अनुमति से हुआ? और यदि भूमि का क्रय-विक्रय हुआ है, तो उस समय किन राजस्व अभिलेखों एवं दस्तावेजों को आधार बनाया गया। इन सभी बिंदुओं की जांच के बिना मामले की पूरी स्थिति स्पष्ट होना मुश्किल है। निजी मद में दर्ज होने और नामांतरण प्रस्तावित किए जाने के संबंध में संबंधित राजस्व अधिकारियों का पक्ष तथा उनके पास उपलब्ध दस्तावेज सामने आने के बाद ही पूरी स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

क्रय-विक्रय के बाद नामांतरण की कार्रवाई प्रस्तावित करने पर उठे सवाल

इस पूरे मामले का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि क्रय-विक्रय के बाद पटवारी संबंधित भूमि को निजी मद की बताते हुए नामांतरण की कार्रवाई प्रस्तावित कर रहे हैं। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब पुराने राजस्व रिकॉर्ड में भूमि तालाब की बताई जा रही है, तो बाद के अभिलेखों में उसे निजी भूमि के रूप में दर्ज किए जाने का आधार क्या है? संबंधित भूमि का स्वरूप किस आदेश या प्रक्रिया के तहत बदला गया? मूल सर्वे नंबर चरणजीत सिंह हुड्डा के समक्ष पहुंचने के बाद प्रशासन की अगली कार्रवाई महत्वपूर्ण हो गई है। पूरे मामले में केवल वर्तमान राजस्व प्रविष्टियों को देखकर निर्णय लेने के बजाय मूल रिकॉर्ड, सर्वे नंबरों के विभाजन, नामांतरण आदेशों और क्रय-विक्रय से जुड़े दस्तावेजों का आपस में मिलान करना जरूरी होगा। प्रमुख सवाल यह हैं- मूल सर्वे नंबर 22 का भूमि रिकॉर्ड क्या कहता है? तालाब की भूमि के विभाजन और नए सर्वे नंबर बनाने का आधार क्या था? भूमि निजी मद में किस प्रक्रिया के तहत दर्ज हुई? क्रय-विक्रय के बाद पटवारी किस आधार पर नामांतरण प्रस्तावित कर रहे हैं? क्या संबंधित अधिकारियों के आदेशों और अभिलेखों की भी जांच होगी? यदि अनियमितता प्रमाणित होती है, तो भूमि के मूल स्वरूप और राजस्व रिकॉर्ड को लेकर क्या वैधानिक कार्रवाई की जाएगी? इन सवालों के जवाब जांच की दिशा और प्रशासनिक कार्रवाई को स्पष्ट कर सकते हैं।

क्या मूल रिकॉर्ड से लेकर रजिस्ट्री तक होगी कड़ी-दर-कड़ी जांच?

अब संपूर्ण प्रकरण एसडीएम

अब एसडीएम के निर्णय पर टिकी निगाहें

करीब 10 महीने बाद प्रारंभिक जांच में शिकायत सही पाए जाने की जानकारी सामने आने और फाइल एसडीएम तक पहुंचने के बाद मामले में आगे की कार्रवाई का इंतजार है। अब देखना होगा कि एसडीएम पूरे प्रकरण की विस्तृत जांच के निर्देश देते हैं या उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर नियमानुसार आगे की कार्रवाई करते हैं। यदि जांच में शासकीय तालाब की भूमि के विभाजन, निजी प्रविष्टियों अथवा नामांतरण प्रक्रिया में नियमों के उल्लंघन की पुष्टि होती है, तो सक्षम प्राधिकारी द्वारा अभिलेखों में सुधार सहित अन्य वैधानिक कदम उठाए जा सकते हैं।चिकलोड़ा पंचायत तालाब का यह मामला अब केवल भूमि के स्वामित्व का सवाल नहीं रह गया है, बल्कि पुराने राजस्व रिकॉर्ड और वर्तमान प्रविष्टियों के बीच अंतर की जांच से भी जुड़ गया है। अब क्षेत्रवासियों की निगाहें एसडीएम के निर्णय पर हैं। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि प्रशासन कथित अनियमितताओं की तह तक पहुंचकर भूमि के मूल स्वरूप और राजस्व रिकॉर्ड की स्थिति स्पष्ट करने के लिए क्या कदम उठाता है।







एमपी ट्रांसको में महिला इंजीनियरों के साथ अब दिव्यांग इंजीनियरों की भी तकनीकी और मैदानी कार्यों में भागीदारी

इन्दौर। मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) में महिला इंजीनियरों की तरह अब दिव्यांग इंजीनियर भी तकनीकी और मैदानी कार्यों में अपने सहकर्मियों के साथ जिम्मेदारियां निभा रहे हैं। इंदौर के मालवा क्षेत्र में ट्रांसमिशन लाइनों के मेंटेनेंस से लेकर एक्स्ट्रा हाई टेंशन (ईएचटी) सबस्टेशनों की टेस्टिंग और रखरखाव तक महिला अभियंताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी क्रम में बीना में दिव्यांग इंजीनियर भी पावर ट्रांसफार्मर के परीक्षण और रखरखाव सहित नियमित तकनीकी कार्यों में भागीदारी कर रहे हैं।



इंदौर में महिला इंजीनियर संभाल रहीं मेंटेनेंस जिम्मेदारियां

एमपी ट्रांसको की अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्रीमती नीलम खन्ना मालवा क्षेत्र में ट्रांसमिशन लाइनों के मेंटेनेंस का कार्य देखती हैं। उनके साथ कार्यपालन अभियंता श्रीमती नम्रता जैन ने पिछले वर्ष इंदौर शहर में त्योहारों के दौरान निर्बाध विद्युत पारेषण व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से सुबह और रात के समय शटडाउन लेकर लाइन संबंधी कार्य कराए थे, ताकि त्योहारों के दौरान विद्युत आपूर्ति व्यवस्था पर अनावश्यक असर न पड़े इंदौर के एक्स्ट्रा हाई टेंशन सबस्टेशनों में टेस्टिंग और मेंटेनेंस संबंधी कार्यों में श्रीमती विनीता भावसार और श्रीमती नूतन शर्मा सहित अन्य महिला अभियंता भी जिम्मेदारियां निभा रही हैं। इन कार्यों में तकनीकी परीक्षण, उपकरणों के रखरखाव और पारेषण व्यवस्था की विश्वसनीयता बनाए रखने से जुड़े दायित्व शामिल हैं।

बीना में दिव्यांग इंजीनियर भी कर रहे ट्रांसफार्मर टेस्टिंग और मेंटेनेंस

बीना स्थित 220 केवी सबस्टेशन में 200 एमवीए क्षमता के पावर ट्रांसफार्मर के मानसून-पश्चात रखरखाव कार्य में दो दिव्यांग इंजीनियरों ने अपने सहकर्मियों के साथ भागीदारी की। 400 केवी टेस्टिंग डिवीजन, बीना में पदस्थ असिस्टेंट इंजीनियर ट्रेनी ऋषिकांत सेन, जिनका दाहिना हाथ नहीं है, और जूनियर इंजीनियर ट्रेनी शुभम श्रीवास्तव रखरखाव एवं परीक्षण संबंधी कार्यों में तकनीकी भूमिका निभा रहे हैं। कार्यपालन अभियंता अर्चित श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में दोनों इंजीनियर ट्रांसफार्मर की जांच, परीक्षण और रखरखाव सहित डिवीजन के नियमित, निवारक तथा ब्रेकडाउन संबंधी कार्यों में भाग लेते हैं। सहायक अभियंता रजत जैन भी उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण देने और कार्यों में सहयोग करने की भूमिका निभा रहे हैं। एमपी ट्रांसको के प्रोक्योरमेंट विभाग में कार्यपालन अभियंता विकास श्रीवास्तव, टेस्टिंग डिवीजन टीकमगढ़ में सहायक अभियंता जी.पी. राय तथा अकाउंट्स ऑफिसर नेहा गुप्ता सहित अन्य दिव्यांग अधिकारी भी अपने-अपने विभागों में जिम्मेदारियां निभा रहे हैं। इस तरह कंपनी में महिला इंजीनियरों की तकनीकी और मैदानी कार्यों में भागीदारी के साथ दिव्यांग इंजीनियरों की सहभागिता भी ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस, सबस्टेशन टेस्टिंग, ट्रांसफार्मर रखरखाव और अन्य विभागीय कार्यों में सामने आ रही है।

सम्पादकीय

85 की उम्र में नोबेल शांति पुरस्कार मिलने के क्या मायने होते हैं?

क्या आपको भी ऐसा महसूस होता है कि नोबेल पुरस्कारों की घोषणा होते ही तमाम तरह की सकारात्मकता हमें और हमारे आसपास के वातावरण को घेर लेती है? मुझे तो ऐसा ही लगता है। और भला क्यों न हो! एक तो तमाम विषय मानो फिर से हमारे जेहन में अपनी गम्भीरता लिए उतर पड़ते हैं, चाहे वह भौतिकी, रसायनशास्त्र, चिकित्सा हो या अर्थशास्त्र। उधर बेसुध होती रीलबद्ध दुनिया को साहित्य के पुरस्कार की जब प्रतिध्वनि आती है, तो उसका ध्यान टूटता है और उसे यकीन होता है कि मनुष्य बिना किसी डिजिटल संगत के भी मानवीय संवेदना को महसूस कर सकता है। खैर, आज चर्चा शांति के पुरस्कार की। जी हां, शांति का पुरस्कार, क्योंकि कोई नहीं बचा- न व्यक्ति, न नेतृत्व और न कोई संस्था- जो वैश्विक स्तर पर शांति की आवाज उन तमाम ड्रोनों, मिसाइलों और भेद बढ़ाते हृदयों तक पहुंचा सके। लेकिन नोबेल तो नोबेल ठहरा। उसे न बढ़ती उम्र दिखी और न जाति, न धर्म, न रंग, न जेंडर और न ही किसी देश की सामरिक और आर्थिक शक्ति। उसने तो इस साल उस भारतीय तमिल मूल की दक्षिण अफ्रीकी महिला को शांति के पुरस्कार के लिए चुना, जो 85 वर्ष की हैं। आप खुद ही अंदाजा लगाइए कि हमारे देश में 85 वर्ष के होने का क्या मतलब होता है? और हमारे आसपास के लोग उस व्यक्ति को इस उम्र के पायदान पर क्या अहसास कराते हैं? लेकिन वे तो नवी पिल्लई हैं, जो रंगभेद-विरोधी कैदियों का बचाव करने से लेकर दुनिया की प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अदालतों और मानवाधिकार संस्थाओं में काम करती रही हैं। न उम्र, न रंग, न आर्थिक तंगी को उन्होंने रास्ते की बाधा बनने दिया और न उनको पहचानने में नोबेल समिति को कोई रोक पाया। 1941 में डरबन के क्लेयरवुड में एक गरीब तमिल परिवार में जन्मीं नवी पिल्लई रंगभेद के माहौल में पली-बढ़ीं। हार्वर्ड से कानून में डॉक्टरेट की डिग्री ली और वे ऐसा करने वाली पहली दक्षिण अफ्रीकी थीं। पर कोई भी लॉ फर्म उन्हें नौकरी पर नहीं रखना चाहती थी, क्योंकि गोरी सेक्रेटरी किसी गैर-गोरी महिला से निर्देश नहीं लेना चाहती थीं। फिर उन्होंने खुद की प्रैक्टिस शुरू की और नटाल में ऐसा करने वाली वे पहली गैर-गोरी महिला थीं। उन्होंने रंगभेद-विरोधी कार्यकर्ताओं का बचाव किया, नजरबंद लोगों के साथ होने वाली यातना और अकेले कैद रखने की घटनाओं को उजागर किया। एक अहम केस जीता, जिससे रॉबेन आइलैंड पर मौजूद राजनीतिक कैदियों- जिनमें नेल्सन मंडेला भी थे- को कानून की किताबों तक पहुंच मिली। नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने जोर दिया कि बढ़ते युद्धों और 'सही के बजाय ताकत' की ओर बढ़ते झुकाव के बीच यह पुरस्कार इस बात को मान्यता देता है कि स्थायी शांति कानूनी सिद्धांतों और जवाबदेही पर टिकी होती है, न कि केवल ताकत पर। नवी पिल्लई का भारत से गहरा नाता है। उनके पिता के परिवार की जड़ें तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले के वथलागुंडु में थीं। उनके दादा-दादी 1890 के दशक में मद्रास प्रेसीडेंसी से नटाल में गन्ने के बागानों में काम करने के लिए अनुबंधित मजदूरों के तौर पर गए और उनके दादा के पैर भी इसी जद्दोजहद में कट गए। उनके पिता बस ड्राइवर थे, लेकिन उन्होंने बेटों के साथ-साथ बेटियों की शिक्षा पर भी जोर दिया। पिता की मौत के बाद उन्होंने तमिलनाडु में अपने बचे हुए रिश्तेदारों को ढूंढा। और साथ-साथ, घृणा और युद्ध में गुम हो गई उस शांति को भी, जिसकी इस दुनिया को सबसे ज्यादा जरूरत है। हर वो नेतृत्व जो शांति की वकालत करता है, वह नवी पिल्लई की संगत में नोबेल पुरस्कार की आभा को महसूस कर सकता है!

दूसरों की लाइन छोटी नहीं, अपनी पहचान बड़ी करने का सफर: चिंटू वर्मा की संघर्ष, समर्पण और सेवा की कहानी



संदीप सेन
वरिष्ठ पत्रकार
मो.न.9755161156

राजनीति में कुछ यात्राएं ऐसी होती हैं, जिनकी कहानी किसी एक चुनावी जीत, किसी एक पद, किसी एक राजनीतिक नियुक्ति अथवा किसी एक बड़े मंच से पूरी नहीं होती। ऐसी यात्राओं का मूल्यांकन समय की लंबी कसौटी पर होता है। वर्षों की तपस्या, लगातार सक्रियता, संगठन के प्रति प्रतिबद्धता, समाज के बीच उपस्थिति, संघर्ष के दौर में धैर्य और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने रास्ते पर चलते रहने का संकल्प–इन सबके सम्मिलित प्रभाव से किसी व्यक्ति की राजनीतिक पहचान आकार लेती है। चिंटू वर्मा का सार्वजनिक जीवन भी ऐसी ही एक लंबी, संघर्षशील और निरंतर यात्रा का परिचय देता है, जिसकी शुरुआत 1995 में विद्यार्थी परिषद के माध्यम से हुई और जो आज तीन दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी अपनी सक्रियता के साथ आगे बढ़ रही है। चिंटू वर्मा की कहानी को केवल भाजपा के संगठनात्मक पदों की सूची के रूप में पढ़ना उनके सफर के साथ न्याय नहीं होगा। यह कहानी उस दौर से शुरू होती है, जब एक किशोर छात्र ने सार्वजनिक जीवन में कदम रखा और कम उम्र में ही देपालपुर नगर विद्यार्थी परिषद के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली। उस समय वह कक्षा दसवीं के विद्यार्थी थे। सामान्यतः जिस उम्र में अधिकांश किशोर अपने व्यक्तिगत भविष्य की दिशा तलाश रहे होते हैं, उसी उम्र में चिंटू वर्मा ने सार्वजनिक समस्याओं और सामाजिक सरोकारों को अपनी चिंता का विषय बनाया। विद्यार्थी परिषद के माध्यम से उन्होंने आंदोलन की भाषा सीखी, संगठन की शक्ति को समझा और यह जाना कि जनता से जुड़े प्रश्न केवल भाषणों से नहीं, बल्कि लगातार संघर्ष और आवाज उठाने से भी सामने आते हैं। यही वह समय था जब देपालपुर की स्थानीय समस्याओं को लेकर उन्होंने आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। कन्या हाई सेकेंडरी स्कूल की मान्यता का विषय हो या क्षेत्र की अन्य स्थानीय समस्याएं, उन्होंने आंदोलन का रास्ता अपनाया। कन्या हाई सेकेंडरी स्कूल की मान्यता के लिए दो बार आमरण अनशन किए जाने की बात उनके राजनीतिक जीवन के इस शुरुआती संघर्ष से जुड़ी हुई है। बिजली की समस्या को लेकर आंदोलन हुए, स्थानीय मुद्दों पर प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने के लिए विरोध प्रदर्शन हुए और सार्वजनिक जीवन में संघर्ष का एक ऐसा अध्याय शुरू हुआ, जिसने आगे चलकर उनकी राजनीतिक शैली की बुनियाद तैयार की। उनके लंबे सार्वजनिक जीवन में चक्काजाम और नगर बंद जैसे आंदोलनों का भी उल्लेख मिलता है। उनके अनुसार पूरे राजनीतिक जीवन में लगभग 25 से 30 बार चक्काजाम और सात-आठ बार नगर बंद जैसे आंदोलन किए गए। यह आंकड़े महज संख्या नहीं हैं, बल्कि उस दौर की राजनीतिक कार्यशैली की एक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जिसमें सड़क पर उतरकर अपनी बात रखना, प्रशासन के सामने सवाल खड़े करना और जनसमस्याओं के लिए संघर्ष करना सार्वजनिक जीवन का हिस्सा हुआ करता था। उस दौर में कांग्रेस सरकार के समय प्रताड़ना और राजनीतिक संघर्ष का सामना करने की बात भी उनके समर्थकों द्वारा कही जाती है। संघर्ष का वह दौर उनके लिए किसी राजनीतिक सुविधा का समय नहीं था, बल्कि अपने विचार और संगठन के लिए खड़े रहने की परीक्षा का समय था। युवा अवस्था में ही आंदोलन और संगठन के बीच तैयार हुई यह राजनीतिक जमीन आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक जीवन में विस्तार पाती गई। भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष के रूप में उन्होंने युवाओं के बीच संगठन को मजबूत करने का प्रयास किया। इसके बाद बुनकर प्रकोष्ठ में प्रदेश संयोजक की जिम्मेदारी मिली। संगठन की अलग-अलग जिम्मेदारियों ने उन्हें समाज के विभिन्न वर्गों के बीच जाने, कार्यकर्ताओं से संवाद करने और संगठन की जमीनी संरचना को समझने का अवसर दिया। इंदौर ग्रामीण भाजपा के जिला अध्यक्ष के रूप में मिली जिम्मेदारी उनके राजनीतिक सफर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रही। यह वह दौर था जब वर्षों तक संगठन में काम करने के बाद एक कार्यकर्ता को जिला स्तर पर नेतृत्व की जिम्मेदारी मिली और उसे संगठन के विभिन्न स्तरों को साथ लेकर चलने की चुनौती भी मिली। लेकिन चिंटू वर्मा की राजनीतिक यात्रा की विशेषता केवल यह नहीं है कि उन्होंने कितने पद संभाले। किसी व्यक्ति की वास्तविक राजनीतिक पहचान केवल इस बात से तय नहीं होती कि वह कितनी बार पद पर रहा, बल्कि इस बात से भी तय होती है कि पद मिलने से पहले उसने कितना काम किया और पद से बाहर आने के बाद उसकी सक्रियता कितनी बनी रही। राजनीति में पद आते-जाते रहते हैं, लेकिन जमीन पर बने रिश्ते और वर्षों में अर्जित विश्वास अचानक समाप्त नहीं होते। यही कारण है कि चिंटू वर्मा की यात्रा को पदों से ज्यादा निरंतरता की यात्रा कहा जा सकता है। उनके राजनीतिक जीवन की सबसे चर्चित विशेषताओं में से एक वह सोच रही है, जिसमें वे दूसरों की राह रोककर आगे बढ़ने के बजाय अपनी राह को लगातार लंबा करने में विश्वास रखते हैं। राजनीति स्वभावतः प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र है। यहां एक पद के लिए अनेक दावेदार होते हैं, एक टिकट के लिए कई नाम सामने आते हैं और संगठनात्मक जिम्मेदारियों के लिए अलग-अलग कार्यकर्ता अपनी आकांक्षाएं रखते हैं। ऐसे वातावरण में मतभेद होना अस्वाभाविक नहीं है। लेकिन चिंटू वर्मा के बारे में उनके करीबियों की धारणा रही है कि उन्होंने व्यक्तिगत विरोध को स्थायी दुश्मनी में बदलने की कोशिश नहीं की। जिन लोगों ने कभी संगठनात्मक स्तर पर उनका विरोध किया, जिन लोगों ने जिला अध्यक्ष के चयन के दौरान उनके खिलाफ संगठित होकर अपनी भूमिका निभाई, उनके साथ भी समय बीतने के बाद संबंध बनाए रखने की बात कही जाती है। राजनीति में यह सादगी अपने आप में एक अलग तरह की शक्ति होती है। विरोध करने वाले व्यक्ति को शत्रु मान लेना आसान है, लेकिन विरोध के बावजूद संबंधों को बचाए रखना कठिन। किसी राजनीतिक निर्णय में मतभेद हो सकता है, किसी पद के चयन में असहमति हो सकती है, किसी टिकट को लेकर अलग राय हो सकती है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि व्यक्तिगत रिश्ते हमेशा के लिए समाप्त हो जाएं। चिंटू वर्मा की राजनीति में इसी भाव को उनके समर्थक उनकी सादगी का हिस्सा मानते हैं। वे राजनीति को व्यक्तिगत कटुता की स्थायी जमीन बनाने के बजाय संवाद और संबंधों की गुंजाइश बनाए रखने वाली जगह के रूप में देखने की कोशिश करते रहे हैं। इसी सोच को उनके जीवन के एक दूसरे पक्ष से भी जोड़कर देखा जाता है–श्रेय लेने की प्रवृत्ति से दूरी। सार्वजनिक जीवन में हर व्यक्ति चाहता है कि उसके द्वारा किए गए काम का उल्लेख हो, उसका नाम सामने आए और उसके योगदान को पहचाना जाए। लेकिन समाज में कुछ काम ऐसे भी होते हैं, जिनका वास्तविक मूल्य इस बात में नहीं होता कि उनका श्रेय किसे मिला। किसी जरूरतमंद की मदद, किसी परिवार के संकट में खड़ा होना, किसी सामाजिक कार्य में सहयोग देना, किसी धार्मिक आयोजन को सफल बनाने में योगदान करना या किसी सामूहिक प्रकल्प के लिए लोगों को जोड़ना–इनमें से बहुत से कार्य ऐसे होते हैं जिनका प्रचार संभव भी नहीं और आवश्यक भी नहीं। चिंटू वर्मा के बारे में उनके समर्थक जिस भाव को सामने रखते हैं, वह यही है कि उन्होंने जीवन में श्रेय लेने की परिपाटी को कभी अपना मूल स्वभाव नहीं बनाया। उनकी सोच का एक भाव यह रहा कि कुछ लोगियां ऐसी होती हैं, जिनके साक्षी मनुष्य नहीं, स्वयं ईश्वर होते हैं। जिन कार्यों की गवाही किसी समाचार, पोस्टर अथवा मंच को देने की जरूरत नहीं होती, वे कार्य भी व्यक्ति के चरित्र का हिस्सा बनते हैं। सार्वजनिक जीवन में यह दृष्टिकोण किसी व्यक्ति के व्यवहार को अधिक आत्मीय और मानवीय बनाता है। उनकी राजनीतिक यात्रा का एक और महत्वपूर्ण अध्याय वर्ष 1996 से शुरू होने वाली शारदीय नवरात्रि की भजन संध्या से जुड़ा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय की भजन संध्या का आयोजन वे लगातार करवाते आ रहे हैं। लगभग तीन दशक से चली आ रही यह परंपरा किसी एक कार्यक्रम की निरंतरता से कहीं अधिक है। हर वर्ष किसी आयोजन को दोहराना आसान नहीं होता। उसके पीछे लोगों से संपर्क, कार्यकर्ताओं की भागीदारी, सामाजिक सहयोग, व्यवस्थाओं का समन्वय और सबसे महत्त्वपूर्ण उस परंपरा को जीवित रखने की इच्छा होती है। समय बदला, राजनीतिक परिस्थितियां बदलीं, संगठन में नए चेहरे आए, पुरानी पीढ़ियां बदलीं, लेकिन इस आयोजन से चिंटू वर्मा का जुड़ाव बना रहा। तीन दशक के आसपास की यह निरंतरता उनके व्यक्तित्व के उस पक्ष को सामने लाती है, जिसमें कार्यक्रम से अधिक संबंध महत्त्वपूर्ण हैं। नवरात्रि की भजन संध्या केवल धार्मिक आयोजन नहीं रही, बल्कि वर्षों से लोगों को जोड़ने वाला सामाजिक अवसर भी बनी। ऐसे आयोजनों में राजनीति, समाज और आस्था के कई स्तर एक-दूसरे से जुड़ते हैं। चिंटू वर्मा की सक्रियता इसी व्यापक सामाजिक संपर्क का हिस्सा रही है। कैलाश विजयवर्गीय के साथ उनके राजनीतिक संबंधों की चर्चा भी लंबे समय से होती रही है। सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में यह संबंध कई अवसरों पर दिखाई दिए हैं। हालांकि किसी भी राजनीतिक व्यक्ति की पहचान



केवल किसी वरिष्ठ नेता से निकटता से तय नहीं होती। बड़े नेताओं से संबंध एक राजनीतिक पहलू हो सकता है, लेकिन किसी कार्यकर्ता की वास्तविक जमीन उसके अपने संगठनात्मक संपर्क, कार्यकर्ताओं के बीच उसकी स्वीकार्यता और जनता के बीच उसकी सक्रियता से तैयार होती है। चिंटू वर्मा की यात्रा को इसी व्यापक संदर्भ में देखना अधिक उचित होगा। वर्तमान समय में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ भी उनके करीबी संबंधों की चर्चा राजनीतिक हलकों में होती रही है। लेकिन उनके राजनीतिक जीवन का महत्त्व केवल बड़े नेताओं से संपर्क में नहीं है। उनका मूल आधार उन वर्षों में तैयार हुआ है, जब वे संगठन के सामान्य कार्यकर्ता के रूप में लोगों के बीच जाते रहे, आंदोलनों में खड़े रहे और स्थानीय समस्याओं को लेकर संघर्ष करते रहे। राजनीति के साथ उनका सामाजिक और धार्मिक जुड़ाव भी उनके सार्वजनिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। सार्वभौम हिंदू समाज श्री 24 अवतार मंदिर के सचिव के रूप में उनकी भूमिका लंबे समय से बताई जाती रही है। मंदिर के निर्माण कार्य से भी वे जुड़े रहे हैं। आज निर्माणाधीन श्री 24 अवतार मंदिर जिस विराट स्वरूप की ओर बढ़ रहा है, उसके पीछे अनेक लोगों की आस्था, दानदाताओं का सहयोग, श्रद्धालुओं की सहभागिता और वर्षों की मेहनत शामिल है। किसी धार्मिक-सामाजिक प्रकल्प को आकार देना केवल निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने का विषय नहीं होता। इसमें समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ना, लोगों के विश्वास को बनाए रखना, सहयोग प्राप्त करना, आयोजन करना और वर्षों तक उस कार्य से जुड़े रहना शामिल होता है। इसी संदर्भ में चिंटू वर्मा की भूमिका को देखा जाता है। मंदिर से जुड़े बड़े आयोजनों में उनकी सक्रियता सामने आती रही है। धार्मिक आयोजन उनके लिए केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने का माध्यम भी रहे हैं। यही कारण है कि उनका सार्वजनिक जीवन राजनीति और धर्म की सीमाओं तक सीमित न रहकर सामाजिक सरोकारों तक विस्तृत दिखाई देता है। उनकी यात्रा का मानवीय पक्ष भी कई अवसरों पर सामने आया है। सार्वजनिक रिपोर्टों में सड़क दुर्घटना के दौरान घायलों को अपने वाहन से अस्पताल पहुंचाने और अन्य घायलों के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था कराने जैसी घटना का उल्लेख हुआ है। ऐसे अवसरों पर राजनीति पीछे छूट जाती है और इंसान सामने आता है। किसी दुर्घटना के समय सहायता का हाथ बढ़ाना किसी पद या राजनीतिक पहचान से ज्यादा मानवीय संवेदना का विषय होता है। चिंटू वर्मा के समर्थक उनकी सामाजिक सक्रियता को इसी मानवीय दृष्टिकोण से जोड़कर देखते हैं। यहां से उनकी राजनीति का एक दूसरा अर्थ सामने आता है–राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के बीच उपस्थित रहने की जिम्मेदारी भी हो सकती है। सत्ता का सुख स्थायी नहीं होता, पद स्थायी नहीं होते, लेकिन लोगों के साथ बने रिश्ते लंबे समय तक टिक सकते हैं। चिंटू वर्मा के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता के सुख के रूप में नहीं देखा। लंबे समय तक विपक्ष में रहकर संघर्ष करना, आंदोलनों में शामिल होना और संगठन के लिए काम करते रहना उनके सार्वजनिक जीवन का हिस्सा रहा है। यह भी उनके सफर की एक दिलचस्प विशेषता है कि राजनीतिक जीवन में उन्हें हर समय परिस्थितियों का लाभ नहीं मिला। उनके समर्थकों का तर्क है कि उन्हें कभी जातीय बहुलता का वह सहज लाभ नहीं मिला, जिसका प्रभाव कई बार स्थानीय राजनीति में दिखाई देता है। उन्हें किसी आरक्षण व्यवस्था से राजनीतिक लाभ मिलने की स्थिति भी नहीं रही और धनबल को उनकी राजनीति की प्रमुख शक्ति नहीं माना गया। इसके बावजूद वे वर्षों तक संगठन में सक्रिय रहे। इस दृष्टि से उनकी राजनीति का आधार संगठनात्मक संपर्क, व्यक्तिगत संबंध, संघर्ष और निरंतर सक्रियता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हालांकि भारतीय राजनीति की वास्तविकता इतनी सरल नहीं होती कि किसी व्यक्ति की सफलता या असफलता को केवल एक कारण से समझ लिया जाए। संगठन, नेतृत्व का विश्वास, स्थानीय समीकरण, सामाजिक संबंध, चुनावी परिस्थितियां, व्यक्तिगत छवि और समय–ये सभी कारक किसी भी राजनीतिक यात्रा को प्रभावित करते हैं। चिंटू वर्मा की कहानी में भी यही अनेक तत्व अलग-अलग समय पर दिखाई देते हैं। देपालपुर उनकी राजनीतिक यात्रा की मूल जमीन रही है। विद्यार्थी परिषद के दिनों से लेकर भाजपा संगठन की जिम्मेदारियों तक उनका जुड़ाव इस क्षेत्र से रहा। 2023 के विधानसभा चुनाव के समय देपालपुर सीट से भाजपा टिकट के दावेदारों में उनका नाम भी सार्वजनिक चर्चा में आया था। उस समय टिकट को लेकर पार्टी के भीतर अलग-अलग नामों की चर्चा और राजनीतिक गतिविधियां सामने आई थीं। यह घटनाक्रम बताता है कि लंबे समय से संगठन में सक्रिय किसी कार्यकर्ता के लिए चुनावी राजनीति में आगे बढ़ने की आकांक्षा किस तरह समय के साथ आकार लेती है। लेकिन टिकट मिलना या न मिलना किसी राजनीतिक जीवन की अंतिम परिभाषा नहीं हो सकता। राजनीति में कई बार वर्षों तक काम करने वाला व्यक्ति भी किसी चुनाव में उम्मीदवार नहीं बन पाता और कभी-कभी संगठन उसे किसी दूसरी भूमिका में देखता है। इसलिए चिंटू वर्मा के सफर को केवल चुनावी टिकट के नजरिए से देखना भी उनकी लंबी यात्रा को सीमित कर देगा। इंदौर ग्रामीण भाजपा के जिला अध्यक्ष के रूप में उनकी जिम्मेदारी इसी संगठनात्मक यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव रही। जिला अध्यक्ष का पद केवल राजनीतिक प्रतिष्ठा का पद नहीं होता। यह संगठन के विभिन्न स्तरों के बीच समन्वय, कार्यकर्ताओं के साथ संवाद, स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियों को समझने और संगठन की गतिविधियों को दिशा देने की जिम्मेदारी भी लेकर आता है। इस भूमिका ने उनके लंबे संगठनात्मक अनुभव को एक बड़े दायरे में काम करने का अवसर दिया। समय के साथ जब संगठनात्मक जिम्मेदारियां बदलीं और जिला अध्यक्ष के रूप में नया नेतृत्व सामने आया, तब भी उनकी सार्वजनिक सक्रियता समाप्त नहीं हुई। यही वह अंतर है जो किसी पदाधिकारी और लंबे समय से सक्रिय कार्यकर्ता के बीच दिखाई देता है। पद समाप्त होने के बाद भी यदि व्यक्ति लोगों के बीच बना रहता है, सामाजिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है और संगठन के साथ संवाद बनाए रखता है, तो उसका राजनीतिक अध्याय बंद नहीं होता। आज उनकी सक्रियता इंदौर ग्रामीण की सीमाओं से आगे पीथमपुर क्षेत्र तक चर्चा में दिखाई देती है। पीथमपुर औद्योगिक, सामाजिक और भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इंदौर और धार के बीच विकसित हो रहे इस क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों के साथ तेजी से बदलती सामाजिक संरचना भी दिखाई देती है। ऐसे क्षेत्र में राजनीतिक सक्रियता का अर्थ केवल चुनावी संपर्क नहीं, बल्कि श्रमिकों, स्थानीय व्यापारियों, ग्रामीण समाज, युवाओं और विभिन्न सामाजिक समूहों से संवाद भी है। इसी कारण पीथमपुर में चिंटू वर्मा की सक्रियता को भविष्य की संभावनाओं से जोड़कर देखा जाने लगा है। आने वाले समय में यदि परिसीमन के बाद क्षेत्र की विधानसभा सीमाओं में परिवर्तन होता है, तो नए राजनीतिक समीकरण बनना स्वाभाविक होगा। देपालपुर के संभावित पुनर्गठन, हातोद के अलग विधानसभा स्वरूप में आने की चर्चाओं और धार विधानसभा क्षेत्र से पीथमपुर के अलग विधानसभा क्षेत्र के रूप में सामने आने की संभावनाओं के बीच कई राजनीतिक चेहरों की सक्रियता को नए संदर्भ में देखा जा सकता है। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि परिसीमन की अंतिम सीमाएं और नए विधानसभा क्षेत्रों का स्वरूप आधिकारिक प्रक्रिया और निर्णयों से ही तय होगा। इसलिए वर्तमान में चल रही चर्चाओं को संभावित राजनीतिक परिदृश्य के रूप में ही देखा जाना चाहिए। यदि भविष्य में देपालपुर, हातोद या पीथमपुर के स्वरूप में परिवर्तन आता है, तो उन क्षेत्रों में लंबे समय से सक्रिय नेताओं और कार्यकर्ताओं की राजनीतिक भूमिका भी नए सिरे से चर्चा में आएगी। इसी संभावित परिदृश्य में चिंटू वर्मा का नाम भी राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बनता है। देपालपुर से उनका पुराना जुड़ाव है, हातोद क्षेत्र में संगठनात्मक संपर्क की चर्चा होती रही है और पीथमपुर में उनकी बढ़ती सक्रियता भी सामने आती रही है। इसके साथ इंदौर और धार के मध्य भविष्य में संभावित लोकसभा क्षेत्र के स्वरूप को लेकर होने वाली किसी भी चर्चा में ऐसे लंबे समय से सक्रिय राजनीतिक चेहरों की भूमिका पर स्वाभाविक रूप से विचार किया जाएगा। हालांकि किसी भी चुनावी दावेदारी का अंतिम निर्णय न तो केवल राजनीतिक चर्चा से होता है और न ही किसी व्यक्ति की इच्छा से। संगठन का निर्णय, परिसीमन की स्थिति, स्थानीय राजनीतिक समीकरण और चुनावी परिस्थितियां मिलकर भविष्य की दिशा तय करती हैं। इसलिए चिंटू वर्मा की वर्तमान सक्रियता को संभावनाओं की जमीन के रूप में देखना अधिक उचित होगा, अंतिम राजनीतिक निष्कर्ष के रूप में नहीं। पीथमपुर की राजनीति में महेश बैरागी के साथ चिंटू वर्मा की सक्रियता की भी चर्चा होती है। दोनों के संबंधों को लेकर स्थानीय राजनीतिक क्षेत्र में अलग-अलग चर्चाएं हैं और दोनों को कैलाश विजयवर्गीय से जुड़े राजनीतिक दायरे के संदर्भ में देखा जाता है।

पिता की स्मृति को समर्पित काव्यांजलि, देपालपुर में गूंजा राष्ट्रवाद, वीर रस और हास्य का स्वर

स्व. रमेश पहलवान यादव की स्मृति में पप्पू यादव ने कराया मालवा का लब्धप्रतिष्ठित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, देशभक्ति की कविताओं और हास्य-व्यंग्य ने बांधा समां

विश्वनाथ समाचार

देपालपुर (संदीप सेन)। पिता के प्रति प्रेम, सम्मान और श्रद्धा जब सार्वजनिक सेवा एवं साहित्यिक आयोजन का रूप लेते हैं, तो वह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भावनाओं, संस्कारों और स्मृतियों को जीवंत रखने का माध्यम बन जाता है। कुछ इसी भावनात्मक संदेश के साथ जय बालाजी ग्रुप के संरक्षक एवं देपालपुर नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष पप्पू यादव ने अपने पूज्य पिताजी स्वर्गीय रमेश पहलवान यादव की स्मृति में नगर के बस स्टैंड पर मालवा का लब्धप्रतिष्ठित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित किया। शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित इस साहित्यिक संध्या में देशभक्ति, राष्ट्रवाद, वीर रस, हास्य, व्यंग्य, गीत और गजलों की ऐसी बहुरंगी प्रस्तुतियां हुईं कि देर रात तक श्रोतागण काव्य रस में सराबोर रहे। यह आयोजन एक पुत्र की ओर से अपने पिता को समर्पित भावपूर्ण श्रद्धांजलि के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति भी रहा। मंच पर कवियों ने जहां अपनी ओजस्वी वाणी से राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत की, वहीं हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समसामयिक विषयों पर श्रोताओं को सोचने और मुस्कुराने का अवसर भी दिया।





श्रद्धा और संस्कारों के साथ हुआ शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती, सतगुरु परमहंस जयकरण दास जी महाराज तथा स्वर्गीय रमेश पहलवान यादव के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पूजन-अर्चन के साथ हुआ। इस दौरान वातावरण श्रद्धा, भक्ति और भावनात्मक आत्मीयता से परिपूर्ण रहा। पिता की स्मृति में आयोजित इस कवि सम्मेलन का मूल भाव यही रहा कि किसी व्यक्ति की स्मृतियां केवल तस्वीरों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि उनके नाम पर किए गए सकारात्मक कार्यों, सांस्कृतिक आयोजनों और समाज को जोड़ने वाली पहल के माध्यम से पीढ़ियों तक जीवित रहती हैं। पप्पू यादव की इस पहल ने साहित्य के माध्यम से अपने पिता के प्रति सम्मान व्यक्त करने का संदेश दिया।

पृथ्वीराज चंदेल की ओजस्वी कविताओं ने जगाया राष्ट्रभाव

कवि सम्मेलन का काव्य प्रवाह कवयित्री प्रीति पांडे की प्रस्तुति से प्रारंभ हुआ। इसके बाद देपालपुर के वीर रस के कवि पृथ्वीराज चंदेल ने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत अपनी कविताओं से श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया। उनकी ओजपूर्ण प्रस्तुति में राष्ट्रप्रेम, देश के प्रति समर्पण और राष्ट्रीय चेतना के भाव प्रमुख रहे। वीर रस की कविताओं की विशेषता यह रही कि उन्होंने श्रोताओं के भीतर देश के प्रति गर्व और सम्मान की भावना को स्वर दिया। स्थानीय प्रतिभा पृथ्वीराज चंदेल की प्रस्तुति ने यह भी दर्शाया कि देपालपुर की धरती पर साहित्य और काव्य की समृद्ध परंपरा मौजूद है।

पार्थ नवीन के राजनीतिक व्यंग्य पर गूंजे ठहाके

राजस्थान के प्रतापगढ़ से आए हास्य एवं पैरोडी कवि पार्थ नवीन ने अपनी विशिष्ट शैली में राजनीति, पुलिस व्यवस्था और सरकार से जुड़े विभिन्न समसामयिक विषयों पर हास्य-व्यंग्य प्रस्तुत किया। उनकी पैरोडी और व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति ने श्रोताओं को खूब गुदगुदाया। हास्य-व्यंग्य की सार्थकता यही है कि वह गंभीर विषयों को भी सहज और रोचक अंदाज में प्रस्तुत करते हुए समाज को उन पर विचार करने का अवसर देता है। पार्थ नवीन की प्रस्तुति में इसी शैली की झलक देखने को मिली। उनकी कविताओं पर श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं से वातावरण में उत्साह और जीवंतता बनी रही।

अशोक चारण ने राष्ट्रवाद, शहीदों और समसामयिक मुद्दों को दिया काव्यात्मक स्वर

जयपुर से आए वीर रस के प्रसिद्ध कवि अशोक चारण की प्रस्तुति कवि सम्मेलन के प्रमुख आकर्षणों में रही। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से ऑपरेशन सिंदूर, राष्ट्रवाद, शहीदों के बलिदान, महिलाओं के सम्मान, देश की अर्थव्यवस्था और समसामयिक राष्ट्रीय विषयों को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी। उन्होंने काशी की ज्ञानवापी से जुड़े विषय और नंदी की प्रतिमा का भी अपनी प्रस्तुति में उल्लेख किया। संत की परिभाषा को रेखांकित करते हुए परमानंद जी महाराज के व्यक्तित्व पर केंद्रित काव्यात्मक व्यंग्य भी प्रस्तुत किए। नीट की परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने से जुड़े मुद्दे पर उन्होंने तर्कपूर्ण व्यंग्य के माध्यम से अपनी बात रखी। वहीं, शहीद भगत सिंह के व्यक्तित्व पर आधारित कविता के जरिए उनके साहस, राष्ट्रसमर्पण और बलिदान की भावना को स्वर दिया। अशोक चारण की प्रस्तुति में वीर रस के साथ समसामयिक विषयों पर टिप्पणी का समावेश रहा। उनकी कविताओं ने श्रोताओं के सामने राष्ट्र, समाज, व्यवस्था और बलिदान जैसे विषयों को साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

प्रीति पांडे के गीत-गजलों ने बांधा काव्य का समां

कवयित्री प्रीति पांडे ने अपनी प्रस्तुतियों में गीत और गजलों के माध्यम से काव्य सम्मेलन को भावनात्मक एवं मधुर रंग प्रदान किया। वीर रस और हास्य-व्यंग्य की प्रस्तुतियों के बीच उनके गीतों और गजलों ने श्रोताओं को संवेदनाओं, भावनाओं और काव्य की मधुरता से जोड़ा। उनकी प्रस्तुति ने कवि सम्मेलन में विविध काव्य विधाओं का संतुलित समावेश किया। ओजस्वी कविताओं से लेकर गीत-गजलों तक की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को साहित्यिक विविधता प्रदान की।

जानी बैरागी की हास्य रचनाओं ने लगाए ठहाके

धार जिले के राजोद से आए हास्य कवि जानी बैरागी ने अपनी चुटीली और मनोरंजक कविताओं से श्रोताओं को खूब हंसाया। उनकी हास्यप्रधान शैली और प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में हंसी-ठहाकों का माहौल बना दिया। उनकी कविताओं में हास्य की सहजता और मंचीय प्रस्तुति का प्रभाव देखने को मिला। श्रोताओं ने उनकी रचनाओं का आनंद लिया और तालियों के साथ उत्साहवर्धन किया। वीर रस, राष्ट्रवाद और समसामयिक विषयों की गंभीर प्रस्तुतियों के बीच जानी बैरागी की हास्य रचनाओं ने कार्यक्रम को मनोरंजन से भरपूर बनाए रखा।

जगदीश सोलंकी के ओजस्वी गीतों ने श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

राजस्थान के कोटा से आए ओजस्वी गीतकार जगदीश सोलंकी ने अपनी सशक्त काव्यात्मक प्रस्तुति से श्रोताओं को प्रभावित किया। उनके गीतों में ओज, भाव और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का समावेश रहा। उनकी प्रस्तुति ने कवि सम्मेलन के साहित्यिक स्वरूप को और व्यापक बनाया। अलग-अलग काव्य विधाओं के माध्यम से कवियों ने यह संदेश दिया कि कविता केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की संवेदनाओं, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करने की सशक्त विधा भी है।

शशिकांत यादव ने किया कवि सम्मेलन का संचालन

पूरे कवि सम्मेलन का संचालन शशिकांत यादव ने किया। उन्होंने मंचीय संचालन के माध्यम से कार्यक्रम की विभिन्न प्रस्तुतियों को क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाया तथा कवियों को मंच प्रदान करते हुए साहित्यिक वातावरण बनाए रखा। कवियों की विविध प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को बहुआयामी स्वरूप दिया। कहीं राष्ट्रप्रेम और शहीदों के बलिदान की गूंज सुनाई दी, तो कहीं समसामयिक विषयों पर व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विमर्श सामने आया। गीत, गजल, हास्य और वीर रस की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को देर तक बांधे रखा।

मुख्य अतिथि निरल पटेल, अध्यक्षता सुमित्रा यादव ने की

कार्यक्रम में देपालपुर विधायक मनोज पटेल के सुपुत्र निरल पटेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष सुमित्रा रमेशचंद्र यादव ने की। इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिकों एवं पत्रकारों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया। आयोजन के माध्यम से समाज के अनुभवी नागरिकों और पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान देने वाले लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया। वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान सामाजिक अनुभव, संस्कार और मार्गदर्शन के महत्व को रेखांकित करता है, वहीं पत्रकारों का सम्मान समाज तक सूचना पहुंचाने और जनहित के मुद्दों को सामने लाने में उनकी भूमिका के प्रति आदर का प्रतीक रहा।

पिता की स्मृति में आयोजन, संस्कारों को आगे बढ़ाने का संदेश

स्वर्गीय रमेश पहलवान यादव की स्मृति में आयोजित यह अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एक पुत्र की भावनाओं और अपने पिता के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति के रूप में सामने आया। पप्पू यादव द्वारा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति को साहित्यिक आयोजन से जोड़ना इस बात का संदेश देता है कि अपनों की यादों को जीवंत रखने के लिए समाजोपयोगी और सांस्कृतिक गतिविधियां महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती हैं। पिता का स्थान जीवन में केवल एक अभिभावक का नहीं, बल्कि संस्कार, मार्गदर्शन और जीवन मूल्यों की नींव रखने वाले व्यक्ति का होता है। ऐसे में उनकी स्मृति में आयोजित कार्यक्रम परिवार की भावनाओं को समाज से जोड़ने का अवसर भी बनते हैं। देपालपुर के बस स्टैंड पर आयोजित इस काव्य संध्या में साहित्य के विभिन्न रंगों के साथ श्रद्धा, सम्मान, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक सहभागिता का संगम देखने को मिला। कवियों की रचनाओं ने श्रोताओं को कहीं भावुक किया, कहीं देश के प्रति गौरव की अनुभूति कराई और कहीं हास्य के माध्यम से मुस्कुराने का अवसर दिया। स्वर्गीय रमेश पहलवान यादव की स्मृति को समर्पित यह आयोजन इस भाव का प्रतीक रहा कि व्यक्ति भले ही हमारे बीच शारीरिक रूप से उपस्थित न हो, लेकिन उसके प्रति प्रेम, सम्मान और स्मरण से जुड़े सकारात्मक प्रयास उसकी स्मृतियों को लंबे समय तक जीवंत रख सकते हैं।

पीथमपुर से उज्जैन तक पहुंचा तांबे का स्क्रैप, पांच गिरफ्तार; अब स्थानीय नेटवर्क पर सवाल

फैक्ट्री से स्क्रैप चोरी की आशंका के बीच उज्जैन पुलिस की कार्रवाई, करीब 11 टन तांबा बरामद; पीथमपुर में भी चर्चा तेज, अप्रैल से माल गायब होने की आशंका

विश्वनाथ समाचार

पीथमपुर (अभिषेक खंडेलवाल)। औद्योगिक नगरी पीथमपुर में स्क्रैप चोरी का मामला अब उज्जैन पुलिस की कार्रवाई के बाद चर्चा में आ गया है। पीथमपुर की एक फैक्ट्री से निकलने वाले तांबे के स्क्रैप को उज्जैन में खपाए जाने की आशंका के बीच पुलिस ने पांच लोडिंग वाहनों को जब्त कर पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जब्त वाहनों में करीब 11 टन तांबे का स्क्रैप मिलने की बात सामने आई है। पुलिस ने बरामद माल की कीमत करीब दो करोड़ रुपये बताई है, जबकि वाहनों की कीमत अलग से लगभग 25 से 30 लाख रुपये आंकी गई है। मामले में सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि स्क्रैप पीथमपुर की फैक्ट्री से निकला था, तो वह परिवहन के दौरान संबंधित दस्तावेजों के बिना उज्जैन तक कैसे पहुंचा? क्या यह केवल एक खेप थी या लंबे समय से स्क्रैप बाहर निकालने का सिलसिला चल रहा था? इन सवालों के जवाब पुलिस की जांच के बाद ही सामने आएंगे।

रणकेश्वर मंदिर के पास कार्रवाई, पांच वाहन जब्त

जानकारी के अनुसार, उज्जैन पुलिस ने सोमवार देर रात रणकेश्वर मंदिर के पास ब्रिज के नीचे कार्रवाई करते हुए तांबे के स्क्रैप से भरे पांच लोडिंग वाहनों को रोका। पुलिस के मुताबिक, वाहनों के चालकों से माल के बिल, बिल्टी और परिवहन से संबंधित दस्तावेज मांगे गए, लेकिन वे वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके। इसके बाद चोरी के माल की आशंका में स्क्रैप सहित वाहनों को जब्त कर लिया गया। कार्रवाई में जब्त वाहनों में चार वाहनों के नंबर सामने आए हैं–एमपी-09-एएक्स-5704, एमपी-09-एजे-2175, एमपी-09-बीके-4988 और एमपी-09-बीआर-4162। इसके अलावा एक बिना नंबर का टाटा एस गोल्ड वाहन भी जब्त किया गया। पुलिस के अनुसार, पांचों वाहनों और उनमें रखे माल का कुल वजन 16,575 किलोग्राम दर्ज किया गया।

पांच आरोपी गिरफ्तार, एक व्यक्ति के भागने की जानकारी

पुलिस ने इस मामले में इंदौर निवासी पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें सुरेश सोलंकी (44), राहुल चौहान (27), शंकर झाला (43), रामकिशन पंवार (55) और विनायक राठौर (22) शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने बताया कि वे पहली बार इस तरह स्क्रैप लेकर उज्जैन आए थे और वाहन के किराए के रूप में 3,200 रुपये दिए गए थे। उनके मुताबिक, माल इंदौर के इंडोरामा क्षेत्र से लोड किया गया था। आरोपियों ने मोहसिन नाम के एक व्यक्ति के साथ आने की बात भी बताई, जो पुलिस की कार्रवाई के दौरान वहां से भाग गया। पुलिस इस व्यक्ति की भूमिका और स्क्रैप के परिवहन से जुड़े अन्य लोगों की जानकारी जुटा रही है। एसपी प्रदीप शर्मा के अनुसार, पीथमपुर के एक व्यापारी की सूचना के बाद पुलिस ने तत्काल कार्रवाई की।

तारीख पर तारीख, हर बार वही 'अंतिम चरण'! इंदौर-धार रेल लाइन का इंतजार कब होगा खत्म?

मई 2025 से अक्टूबर 2026 तक खिसकती रही समयसीमा, अब 28-29 अक्टूबर को सीआरएस निरीक्षण प्रस्तावित; यात्री ट्रेन शुरू होने की निश्चित तारीख का इंतजार

विश्वनाथ समाचार



पीथमपुर, अभिषेक खंडेलवाल। इंदौर से धार तक रेल यात्रा शुरू होने का इंतजार लंबे समय से कर रहे लोगों की निगाहें अब अक्टूबर के अंतिम सप्ताह पर टिकी हैं। इंदौर-दाहोद नई रेल लाइन परियोजना के अंतर्गत टीही से धार तक लगभग 46-47 किलोमीटर लंबे रेलखंड के निर्माण को लेकर समय-समय पर अलग-अलग समयसीमाएं सामने आती रही हैं। कभी सुरंग निर्माण को अंतिम चरण में बताया गया, तो कभी पटरी बिछाने, विद्युतीकरण और सिग्नलिंग का काम पूरा होने के करीब होने की जानकारी दी गई। अब अक्टूबर के अंत तक निर्माण कार्य पूरा करने और 28-29 अक्टूबर 2026 को रेल सुरक्षा आयुक्त (सीआरएस) का निरीक्षण प्रस्तावित होने की बात सामने आई है। इसके बावजूद नियमित यात्री रेल सेवा शुरू होने की निश्चित तारीख की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। ऐसे में क्षेत्रवासियों का सवाल है कि आखिर ट्रेन में सफर करने का सपना कब साकार होगा?

मई 2025 से अक्टूबर 2026 तक पहुंची समयसीमा

इंदौर-दाहोद रेल परियोजना का टीही-धार रेलखंड लंबे समय से निर्माणाधीन है। दिसंबर 2024 में आई रिपोर्टों में टीही सुरंग का काम तेजी से पूरा करने के लिए अतिरिक्त मशीनें लगाने की जानकारी सामने आई थी। उस समय धार की ओर रेलखंड का निर्माण मई 2025 तक पूरा करने का लक्ष्य बताया गया था। इसके बाद निर्माण की समयसीमा आगे बढ़ती रही। मार्च 2026 में पीथमपुर से धार के बीच रेल पटरी के परीक्षण की खबरें सामने आईं। जुलाई 2026 में सिग्नलिंग का 95 प्रतिशत से अधिक काम पूरा होने की जानकारी दी गई, जबकि अगस्त में सुरंग के भीतर बिना गिट्टी वाली पटरी बिछाने के काम को अंतिम चरण में बताया गया। अब अक्टूबर 2026 में सुरंग के भीतर पटरी बिछाने का काम पूरा होने और शेष तकनीकी कार्यों को जल्द पूरा करने की जानकारी सामने आई है। निर्माण विभाग की ओर से 28 और 29 अक्टूबर को रेल सुरक्षा आयुक्त के निरीक्षण की तारीख प्रस्तावित बताई जा रही है। ऐसे में अब सबकी निगाहें शेष कार्यों की पूर्णता, सुरक्षा निरीक्षण और आवश्यक मंजूरी पर टिकी हैं।

हर बार अंतिम चरण, लेकिन परिचालन की तारीख अब भी अनिश्चित

रेलवे की ओर से समय-समय पर निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी दी जाती रही है। लेकिन आम लोगों के लिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि सुरंग तैयार हो गई, पटरी बिछ गई या सिग्नलिंग का काम लगभग पूरा हो चुका है।

क्षेत्रवासियों का मुख्य सवाल यह है कि रेलखंड पूरी तरह तैयार कब होगा और यात्री ट्रेन वास्तव में किस तारीख से चलने लगेगी?

निर्माण कार्य की समयसीमा बार-बार आगे बढ़ने से लोगों की उत्सुकता के साथ-साथ इंतजार भी बढ़ता गया है। अब रेलवे से यह स्पष्ट जानकारी मिलने की अपेक्षा है कि कौन-कौन से कार्य शेष हैं, उन्हें पूरा करने की अंतिम समयसीमा क्या है और रेल सुरक्षा आयुक्त के निरीक्षण के बाद यात्री परिचालन शुरू करने के लिए किन प्रक्रियाओं को पूरा करना होगा।

सुरंग तैयार, लेकिन सुरक्षा मंजूरी की प्रक्रिया अहम

टीही और पीथमपुर के बीच लगभग 2.976 किलोमीटर लंबी सुरंग इस रेलखंड का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हालिया जानकारी के अनुसार, सुरंग के भीतर बिना गिट्टी वाली पटरी बिछाने का काम पूरा हो चुका है। इसके साथ ही विद्युतीकरण, प्रकाश व्यवस्था, निकास पंखों और अन्य तकनीकी सुविधाओं से जुड़े कार्य भी परियोजना का हिस्सा हैं। रेलखंड को यात्री परिचालन के लिए तैयार करने के उद्देश्य से पटरी, सिग्नलिंग प्रणाली, स्टेशनों और अन्य संबंधित संरचनाओं का निर्धारित मानकों के अनुरूप होना जरूरी है। इसके बाद रेल सुरक्षा आयुक्त का निरीक्षण और आवश्यक सुरक्षा मंजूरी महत्वपूर्ण होगी। पीथमपुर, सागौर, गुणावद और धार इस रेलखंड के प्रमुख पड़ाव हैं। इन क्षेत्रों के लिए रेल संपर्क औद्योगिक गतिविधियों, व्यापार और यात्री आवागमन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हालांकि, निर्माण कार्य पूरा होने और नियमित यात्री सेवा शुरू होने के बीच सुरक्षा संबंधी प्रक्रियाओं का पूरा होना आवश्यक है।

पूरी इंदौर-दाहोद रेल परियोजना की समयसीमा फरवरी 2027

केंद्र सरकार के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की फरवरी 2026 की फ्लैश रिपोर्ट में इंदौर-दाहोद नई रेल लाइन परियोजना की संभावित पूर्णता अवधि फरवरी 2027 दर्ज की गई थी। यहां यह अंतर समझना जरूरी है कि टीही से धार तक के रेलखंड का निर्माण पूरा होना और पूरी इंदौर-दाहोद रेल लाइन का पूरा होना दो अलग-अलग बातें हैं। इसलिए पूरे परियोजना की समयसीमा को केवल टीही-धार रेलखंड के परिचालन की तारीख नहीं माना जा सकता। फिलहाल टीही-धार रेलखंड के लिए अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में रेल सुरक्षा आयुक्त का निरीक्षण प्रस्तावित बताया जा रहा है। लेकिन निरीक्षण की वास्तविक स्थिति, सुरक्षा मंजूरी और नियमित यात्री रेल सेवा शुरू होने की तारीख की आधिकारिक पुष्टि होना अभी बाकी है।

अब तारीख नहीं, ट्रेन संचालन की स्पष्ट जानकारी चाहिए

पीथमपुर और धार क्षेत्र के लोगों के लिए यह रेलखंड केवल परिवहन सुविधा नहीं, बल्कि औद्योगिक और व्यावसायिक विकास की संभावनाओं से भी जुड़ा है। रेल संपर्क शुरू होने से क्षेत्र के यात्रियों, व्यापारियों और औद्योगिक इकाइयों को लाभ मिलने की उम्मीद है। हालांकि, इसका वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब निर्माण कार्य पूरा होने के साथ सुरक्षा निरीक्षण और आवश्यक मंजूरियों की प्रक्रिया संपन्न होगी तथा यात्री रेल सेवा शुरू होगी। अब क्षेत्रवासियों की अपेक्षा केवल नई समयसीमा सुनने की नहीं, बल्कि स्पष्ट और आधिकारिक जानकारी मिलने की है कि ट्रेन कब से चलेगी। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में प्रस्तावित निरीक्षण के बाद स्थिति कितनी स्पष्ट होती है, इस पर सभी की निगाहें रहेंगी।

इंदौर में 28 अक्टूबर को आयोजित होगा राज्य स्तरीय अर्बन कॉन्क्लेव

अर्बन चैलेंज फंड की 2,753.10 करोड़ रूपये की परियोजनाओं को मिलेगा नया आयाम

इंदौर। मध्यप्रदेश में समृद्ध एवं आधुनिक नगरीय अधोसंरचना के सर्वांगीण विकास, निवेश प्रोत्साहन तथा प्रदेश के शहरों को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित बनाने के ध्येय से आगामी 28 अक्टूबर, 2026 को इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में राज्य स्तरीय 'अर्बन कॉन्क्लेव' का आयोजन किया जा रहा है। कॉन्क्लेव में 'अर्बन चैलेंज फंड' के अंतर्गत स्वीकृत प्रमुख नगरीय विकास परियोजनाओं की भौतिक प्रगति, सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन एवं समयबद्ध क्रियान्वयन से जुड़े दूरगामी रणनीतिक पहलुओं पर गहन विचार-मंथन किया जाएगा। यह कॉन्क्लेव प्रदेश के शहरी परिदृश्य को नई ऊँचाइयों पर ले जाने तथा नगरीय विकास की भावी दिशा तय करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। अर्बन कॉन्क्लेव में 'अर्बन चैलेंज फंड' के अंतर्गत स्वीकृत परियोजनाओं के लिए वित्तीय संस्थानों एवं बैंकों के साथ अनुबंध किये जाएँगे तथा संबंधित एजेंसियों को 'लेटर ऑफ अवार्ड' प्रदान किए जाएँगे । अर्बन चैलेंज फंड के तहत प्रदेश के विभिन्न नगरों में संचालित एवं प्रस्तावित विकास कार्यों की कुल स्वीकृत लागत 2,753.10 करोड़ रूपये है। इस वित्तीय नियोजन के माध्यम से इंदौर, उज्जैन और रीवा की महत्वपूर्ण विकास योजनाओं को गति दी जा रही है। इसके अंतर्गत इंदौर शहर की जलप्रदाय व्यवस्था के वितरण तंत्र के सुदृढ़ीकरण तथा सीवरेज नेटवर्क एवं उपचार संयंत्रों के व्यापक उन्नयन कार्य शामिल हैं। इसी श्रृंखला में धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी उज्जैन में 'एकीकृत मंदिर क्षेत्र विकास' की महत्वाकांक्षी परियोजना तथा रीवा नगर की सर्वसमावेशी जलप्रदाय योजना के कार्यों को धरातल पर उतारा जा रहा है। कॉन्क्लेव के माध्यम से प्रदेश के नगरीय निकायों में आधारभूत सुविधाओं के अभूतपूर्व विस्तार, आधुनिक शहरी अधोसंरचना के निर्माण तथा वित्तीय संसाधनों के सर्वाधिक प्रभावी एवं पारदर्शी उपयोग की संभावनाओं को नए आयाम दिए जा रहे हैं। अर्बन चैलेंज फंड से संचालित ये परियोजनाएं न केवल शहरों में जन-सुविधाओं का विस्तार कर 'ईज़ ऑफ लिविंग' के उच्च मानक स्थापित करेंगी, बल्कि नगरीय निकायों को वित्तीय रूप से स्वावलंबी बनाते हुए क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को भी संबल प्रदान करेंगी। राज्य स्तरीय अर्बन कॉन्क्लेव शहरी विकास के क्षेत्र से जुड़े राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, प्रमुख निवेशकों, वित्तीय संस्थानों, नवोन्मेषी स्टार्टअप्स तथा ऊर्जावान युवाओं को मध्यप्रदेश में सृजित हो रही अपार विकास संभावनाओं से सीधे जुड़ने का एक सशक्त मंच प्रदान करेगा।



बांडीखाली की तंबाकू फैक्ट्री और सियासी रसूख की चर्चाएं, बाउंसरों की मौजूदगी पर उठ रहे सवाल

विश्वनाथ समाचार

पीथमपुर। पीथमपुर के बांडीखाली स्थित तंबाकू फैक्ट्री को लेकर इन दिनों क्षेत्र में तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। फैक्ट्री के कथित राजनीतिक संपर्कों से लेकर वहां बड़ी संख्या में बाउंसरों की मौजूदगी तक, कई सवाल लोगों के बीच चर्चा का विषय बने हुए हैं। चर्चाओं में दावा किया जा रहा है कि फैक्ट्री के संपर्क पीथमपुर से लेकर दिल्ली तक के प्रभावशाली गलियारों से जुड़े हो सकते हैं। हालांकि, इन चर्चाओं की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। इसी बीच फैक्ट्री में 100 से अधिक बाउंसरों की मौजूदगी होने की बात भी कही जा रही है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि औद्योगिक इकाई में इतनी बड़ी संख्या में बाउंसरों की तैनाती की आवश्यकता क्यों है? कुछ लोगों ने आरोप लगाया है कि बाउंसरों के जरिए मजदूरों पर दबाव बनाया जाता है और विरोध करने वालों को डराने-धमकाने की कोशिश की जाती है। हालांकि, इन आरोपों की भी स्वतंत्र पुष्टि होना बाकी है। दूसरी ओर, क्षेत्र में प्रदूषण और दुर्गंध को लेकर रहवासियों की शिकायतें भी चर्चा में हैं। इन शिकायतों के निराकरण और संबंधित विभागों की कार्रवाई को लेकर भी लोग सवाल उठा रहे हैं।

अब निगाहें संबंधित विभागों की कार्रवाई पर

फैक्ट्री को लेकर उठ रहे सवालों के बीच यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि संबंधित विभाग पर्यावरण संबंधी शिकायतों, औद्योगिक गतिविधियों और सुरक्षा व्यवस्था की जांच को लेकर क्या कदम उठाते हैं। यदि शिकायतों में तथ्य पाए जाते हैं, तो नियमानुसार कार्रवाई की अपेक्षा की जा रही है। फिलहाल क्षेत्र में चर्चाएं जरूर तेज हैं, लेकिन वास्तविक स्थिति संबंधित विभागों की जांच, आधिकारिक अभिलेखों और उपलब्ध तथ्यों के सामने आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।


जय जबरेश्वर..
जय श्रीराम...
नवरात्रि के पावन पर्व पर
आमंत्रण
विश्व प्रसिद्ध भजन गायक
छोटू सिंह रावणा की
भजन गायक
शशांक तिवारी कुंदनपुर
भव्य
भजन संध्या
16 अक्टूबर 2026
शाम 07 बजे..
स्थान : लौहार पट्टी, देपालपुर
निवेदक :
॥ जबरेश्वर सेना ॥
आयोजक :
पार्षद अनिल धाकड़
नगर परिषद् देपालपुर



स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, संदीप परमार द्वारा 106, लीला रेसीडेंसी, कॉलोनी वार्ड नंबर 07, देपालपुर, जिला इंदौर म.प्र. से प्रकाशित तथा उदयरत्न ऑफसेट 170/2, दारू गोडाउन के आगे आगर रोड उज्जैन से मुद्रित।
मो.न.9755161156 सम्पादक संदीप परमार, RNI No. MPHIN/25/A4357 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र देपालपुर रहेगा), (नोट: पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)